International Journal of Education and Science Research Review
Volume-8, Issue-5 November- 2021
E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

"प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन"

शोधार्थी :-
भावना गुप्ता
रिसर्च स्कॉलर
शोभित डीम्ड विश्वविद्यालय
मोदीपुरम, मेरठ

निर्देशिका:-
डॉ. सुरक्षा बंसल
डीन एवं विभाग अध्यक्ष
शोभित डीम्ड विश्वविद्यालय
मोदीपुरम, मेरठ

शोध सारांश -

भारत में प्राथमिक शिक्षा आज भी शैशवावस्था में है जिसका कारण प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के संग शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक कार्यों का होना है! आज प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता तो तय कर दी गई है परंतु प्राथमिक शिक्षकों की कोई विशेष व्यवस्था नहीं है! यह अनिवार्यता केवल कागजी कार्यवाही है व्यावहारिक तौर पर कोई कार्रवाई नहीं है।

प्राथमिक स्तर के शिक्षक द्वारा गैर शैक्षणिक कार्य कराकर उनकी योग्यता का शोषण किया जा रहा है जिस कारण शिक्षक अपना शिक्षण कार्य रुचिपूर्ण ढंग से नहीं कर पाते। प्रस्तुत लघु शोध के अंतर्गत उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के 39 चयनित विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों को क्रमांकित किया गया!

प्रस्तुत अध्ययन के लिए स्वयं निर्मित प्रश्नावली तैयार करके विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं से प्राप्तांक ज्ञात किए गए।

प्रस्तुत शोध द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षकों के शिक्षण को अधिक प्रभावित करते हैं।

प्रस्तावना-

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिको ने इस बात की पुष्टि की है कि शैशवावस्था व बाल्यावस्था में विकास की गति सबसे तीव्र होती है तथा इसी में संस्कारों का निर्माण होता है इसलिए इस अवस्था में बच्चों की देखरेख तथा शिक्षा पर ध्यान देने से भविष्य में देश को सुयोग्य एवं कर्मठ नागरिक मिल सकते हैं इसके लिए आवश्यक है कि जो शिक्षक उन्हें शिक्षित कर रहा है वह उन्हें भली प्रकार समझें और उन्ही के अनुसार शिक्षा दें।

अतः शिक्षक जिन मनोवृत्तियों एवं आदतों का विकास बच्चों में करता है बड़े होने पर उसके व्यक्तित्व में हम उन्हें गुणों का विकसित रूप पाते हैं अतः यदि हमें कर्तव्यनिष्ठा एवं अनुशासित नागरिक तैयार करने है तो बालकों की प्राथमिक शिक्षा के साथ साथ शिक्षकों पर भी विशेष ध्यान देना होगा।

प्राथमिक शिक्षकों के चुनाव के लिए उचित मानक तैयार किए जाएं जिससे प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाया जा सके।

समस्या कथन-

प्रस्तुत लघु शोध पत्र को निम्नलिखित रूप से शब्दंकित किया गया है।

"प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य-

प्रत्येक अनुसंधान का एक उद्देश्य होता है क्योंकि उद्देश्य के अभाव में किसी कार्य की सार्थकता सिद्ध नहीं हो सकती! प्रस्तुत लघु शोधकार्य में इन्हीं सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं!

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारकों का महिला व पुरुष शिक्षकों पर प्रभाव ज्ञात करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले समायोजन कारक का महिला व पुरुष शिक्षकों पर प्रभाव ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पना-

शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का चयन किया।

1. प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारकों के प्रति अध्यापक व अध्यापिकाओं के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है।
2. प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले समायोजन कारकों के प्रति अध्यापक व अध्यापिकाओं के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएं -

प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श में केवल मेरठ जनपद के प्राथमिक विद्यालयों को ही लिया गया जिसमे नगर व ग्रामीण क्षेत्र के 39 प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया और केवल 152 प्राथमिक शिक्षकों को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया।

पूर्व में किए गए शोध कार्य--

प्रस्तुत शोध विषय से संबंधित साहित्य के अंतर्गत अनेक पत्र- पत्रिकाओं, पुस्तक, प्रकाशित- अप्रकाशित शोध प्रबंध तथा अभिलेखों का अध्ययन किया गया है जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से समस्या से संबंधित है!

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध समस्या से संबंधित साहित्य का गहन अध्ययन किया! अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे--

1 एन०सी०ई०आर०टी० रिपोर्ट(1971)

(शिक्षण कार्य के प्रति अध्यापकों की प्रतिक्रिया का सर्वेक्षण) प्रस्तुत अध्ययन अध्यापकों की शिक्षण कार्य के प्रति स्वीकृति पर आधारित है! इस अध्ययन के लिए सभी राज्यों के तीन स्कूलों से अध्यापकों के लिए न्यादर्श का चयन किया गया जिसके निष्कर्ष निम्नलिखित है।

1. विभिन्न प्रबंध मंडलों के नीचे कार्य करने वालों की विचारधारा भिन्न थी।
2. स्त्री व पुरुष अध्यापकों के दृष्टिकोणों में पर्याप्त भिन्नता पायी गयी।
3. प्रौढ शिक्षकों की अपेक्षा युवा वर्ग के शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया।

सीरी वे गुप्ता (1999)

ने थाईलैंड के प्राइवेट सामान्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत् हैं।

1- शैक्षिक स्तर के आधार पर शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं था।
2- महिला व पुरुष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं था।

सिंह (2001) ने सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों तथा गैर उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के मूल्य व व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन कर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए-

1- गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों व उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया।
2- गैर सरकारी उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षक अपने व्यवसाय से असंतुष्ट थे।

अली (2004) ने मदरसे व सरस्वती शिशु मंदिर के अध्यापकों के मूल्य व व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन कर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए- 1- मदरसे व सरस्वती शिशु मंदिर के अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर था तो मदरसे के शिक्षकों के व्यवसायिक संतुष्टि औसत तथा सरस्वती शिशु मंदिर के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि अच्छे स्तर की पायी गयी।

द्विवेदी(2008) ने उच्च शिक्षण संस्थानो में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि व मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया।

1. उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में लिंग के आधार पर कोई अंतर नहीं था तो उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि व मानसिक स्वास्थ्य में धनात्मक संबंध पाया गया।

अध्ययन विधि-

प्रस्तुत अध्ययन मेरठ जनपद के सरकारी सहायता प्राप्त प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर किया गया है। समस्या के समाधान के लिए शोधार्थी ने सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया है।

जनसंख्या-

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के लिए मेरठ जनपद के सरकारी सहायता प्राप्त प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य करने वाले समस्त अध्यापक व अध्यापिकाएं ही जनसंख्या है।

न्यादर्श चयन-

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने यादृच्छिक न्यादर्श पद्धति को आधार बनाया और प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं को लिया है । प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के अंतर्गत अध्ययन हेतु मेरठ जनपद के प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के अध्यापक तथा अध्यापिकाओं का चयन प्रसंभाव्यता लाटरी विधि से किया गया। शोधकर्ता ने न्यादर्श हेतु 76 अध्यापकों तथा 76 अध्यापिकाओं का चयन किया।

क्र0 सं0	वर्ग	सदस्य संख्या
1	अध्यापक	76
2	अध्यापिकायें	76
3	योग	152

शोध के उपकरण-

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा निर्मित दृष्टिकोण मापनी का प्रयोग किया गया है । इस मामले में प्राथमिक शिक्षकों के शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण जाने हेतु विभिन्न पदों का निर्माण किया गया है।

आंकडों का संकलन-

आंकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता ने मेरठ जिले के चयनित विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों को क्रमांकित किया जिनमें 15 प्राथमिक विद्यालय नगर क्षेत्र तथा 24 प्राथमिक विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र के थे।

परीक्षण का फलांकन-

परीक्षण के प्रशासन के उपरांत संकलित प्रपत्रों का फलांकन किया गया। प्रयोजनों द्वारा दी गयी प्रतिक्रिया का पांच स्केल पर फलांकन किया गया कथनों हेतु अंक देने की प्रक्रिया अधोलिखित तालिका में दर्शाई गई है।उपकरण में केवल सकारात्मक कथनों को यादृच्छिक रूप से वितरित किया गया है।

क्र0 सं0	प्रतिक्रिया	टंक
1	सर्वाधिक	5
2	अधिक	4
3	सामान्य	3
4	कम	2
5	बिल्कुल नहीं	1

प्रयुक्त सांख्यिकी-

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि,क्रांतिक अनुपात और टी टेस्ट को प्रयुक्त किया गया और विभिन्न सांख्यिकीय परीक्षणों के उपरांत परिकल्पनाओं की पुष्टि की गई।

परिकल्पनाओं की पुष्टि--

1. प्रथम परिकल्पना की पुष्टि के लिए निम्न तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षण को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारक के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण के प्राप्तांकों का मध्यमान 16.73 है तथा अध्यापिकाओं के दृष्टिकोण के प्राप्तांकों का मध्यमान 18.18 है। इस प्रकार प्राथमिक स्तर के शिक्षण को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारक के प्रति अध्यापक तथा अध्यापिकाओं के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।

क्र0 सं0	वर्ग	सदस्य संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	"t" का मान
1	अध्यापक	38	16.73	2.4	2.73
2	अध्यापिकाओं	38	18.18	2.23	

2. द्वितीय परिकल्पना की पुष्टि के लिए बनाई गई तालिका के अनुसार यह प्रमाणित हुआ है कि समायोजन कारक के प्रति अध्यापक तथा अध्यापिकाओं के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है ।

क्र0 सं0	वर्ग	सदस्य संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	"t" का मान
1	अध्यापक	38	18.38	1.95	2.76
2	अध्यापिकाओं	38	19.66	2.20	

अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षण को प्रभावित करने वाले समायोजन कारक पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षकों के शिक्षण को अधिक प्रभावित करता है।

निष्कर्ष--

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ--

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर शोधकर्ता ने पाया कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षकों को अधिक प्रभावित करते हैं व आर्थिक व व्यवहार कारक शिक्षण को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं प्राथमिक शिक्षकों के आवागमन की सुविधाएं, जटिल कार्य दशाएँ, बढ़ते हुए शिक्षणेत्तर दायित्व जैसे जनगणना, मतगणना, प्रतिष्ठा को धन के साथ जोड़ना, पुरुष प्रधान समाज, सामाजिक दायित्व, पारिवारिक दायित्व आदि वे महत्वपूर्ण कारक हैं जिनके कारण पुरुषों का शिक्षण महिलाओं की अपेक्षा निम्न है।

इसके अतिरिक्त प्राथमिक शिक्षकों के समक्ष भविष्य में उन्नति के अवसर भी पर्याप्त नहीं है अतः शोधार्थी प्राथमिक शिक्षकों के शिक्षण को उच्चतर स्तर तक ले जाने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत कर रही है।

1. प्राथमिक शिक्षकों को प्रोन्नति के अच्छे अवसर उपलब्ध कराए जाएं उन्हें योग्यता व अनुभव के आधार पर उप जिला शिक्षा अधिकारी, सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी, तथा शिक्षा अधिकारी के पदों पर प्रोन्नति प्रदान की जाए ।
2. प्राथमिक शिक्षकों को सभी सरकारी शिक्षकों के समान सुविधाएं प्रदान की जाए ताकि वे शिक्षण कार्य पर पूरी तरह ध्यान दे सकें।
3. पुरुष शिक्षकों के आवागमन की सुविधा की दृष्टि से यथासंभव उनके निवास स्थान के विकास खंड में नियुक्त किया जाए ।
4. प्राथमिक शिक्षकों को विद्यालय में स्थायित्व प्रदान किया जाए जिससे शिक्षक अपना पूरा समय शिक्षण कार्य में लगा सके प्राथमिक शिक्षकों से गैर शैक्षणिक कार्य न कराए जाएं । प्राथमिक शिक्षकों की प्रशिक्षण अवधि बढ़ाई जाए। प्राथमिक शिक्षकों का अनुभव दो वर्ष किया जाए।

5. यद्यपि शोधार्थी प्रस्तुत परिधि को विस्तृत करने की आकांक्षी थी किंतु विविध व्यवस्थागत तथा अपरिहार्य अव्यवस्थाओं के कारण ऐसा नहीं किया जा सका ।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव निम्नवत हैं--

1. प्रस्तुत शोध को मेरठ क्षेत्र के प्राथमिक विद्‌यालयों तक सीमित किया गया है । इसे अन्य जिलों के क्षेत्रों तक भी अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध में शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारकों के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षण संतुष्टि का अध्ययन किया गया है भावी शोधकर्ता उनके शैक्षिक स्तर , शिक्षण अनुभव आदि के आधार पर अध्ययन कर सकते हैं।
3. प्रस्तुत शोध प्राथमिक शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारकों पर संपन्न किया गया है भविष्य में शिक्षा के अन्य स्तरों जैसे माध्यमिक व उच्च शिक्षा में विशेष रूप से कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची--

1. भटनागर ए० बी० (1992) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन मेरठ सूर्य पब्लिकेशन ।
2. जैन डी. (1999)शिक्षा का गिरता स्तर, दोषी कौन ? प्राइमरी शिक्षक जनवरी 9 नई दिल्ली एनसीईआरटी।
3. कपिल एच० के० (1955) अनुसंधान विधियॉ आगरा हर प्रसाद भार्गव बुक हाउस ।
4. पाण्डेय आर0एस0 (1998) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।
5. सिंह के (2003) भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास लखीमपुर खीरी गोविंद प्रकाशन ।
6. सिंह एन०पी० (2003)शिक्षा के दार्शनिक आधार मेरठ आर लाल बुक डिपो ।
7. वर्मा एस० बी०(1996)बृहत विश्व सूक्ति कोष दिल्ली प्रभात प्रकाशन ।
8. शर्मा आर० ए० (1995) फंडामेंटल्स ऑफ एजुकेशनल रिसर्च मेरठ इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस ।